2019

This question paper contains 4 printed pages.

Your Roll No. ....

DESHBANDHU COLLEGE LIBRARY Kalkaji, New Delhi-19

Sl. No. of Ques. Paper : 2406

Unique Paper Code : 62051312

Name of Paper : HINDI - A

Name of Course : B.A. (Prog.) CBCS

Semester : III

Duration : 3 hours

Maximum Marks : 75

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिये गये निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिये।)

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित अवतरणों की सप्रसंग कीजिए:

(क) किन्तु अदालत में पहुँचने की देर थी। पंडित अलोपीदीन इस अगाध वन के सिंह थे। अधिकारी वर्ग उनके भक्त, अमले उनके सेवक, वकील-मुख्तार उनके आज्ञापालक और अरदली, चपरासी तथा चौकीदार तो उनके बिना मोल के गुलाम थे। उनके देखते ही लोग चारों तरफ से दौड़े। सभी लोग विस्मित हो रहे थे। इसलिए नहीं कि अलोपीदीन ने क्यों यह कर्म किया बल्कि इसलिए कि वह कानून के पंजे में कैसे आए। ऐसा मनुष्य जिसके पास असाध्य साधन करने वाला धन और अनन्य वाचालता हो, वह क्यों कानून के पंजे में आए।

अथवा

उसने तो अपने किये का फल पा लिया, पर मैं समस्या का

P. T. O.

downloaded from StudentSuvidha.com

Download all NOTES and PAPERS at StudentSuvi

समाधान नहीं पा सकी। इस बार की असफलता ने तो बस मुझे रुला ही दिया। अब तो इतनी हिम्मत भी नहीं रही कि एक बार फिर मध्यम वर्ग में अपना नेता उत्पन्न करके फिर से प्रयास करती। इन दो हत्याओं के भार से ही मेरी गर्दन टूटी जा रही थी, और हत्या का पाप ढोने की न इच्छा थी, न शक्ति ही। और अपने सारे अहं को तिलांजलि देकर बहुत ही ईमानदारी से मैं कहती हूँ कि मेरा रोम-रोम महसूस कर रहा था कि कवि भरी सभा में शान के साथ जो नहला फटकार गया था, उस पर इक्का तो क्या, मैं दुग्गी भी न मार सकी। मैं हार गयी, बुरी तरह हार गयी।

(ख) दु:ख के वर्ग में जो स्थान भय का है, वही स्थान आनंद-वर्ग में उत्साह का है। भय में हम प्रस्तुत कठिन स्थिति के नियम से विशेष रूप में दुखी और कभी-कभी उस स्थिति से अपने को दूर रखने के लिये प्रयत्नवान भी होते हैं। उत्साह में हम आने वाली कठिन स्थिति के भीतर साहस के अवसर के निश्चय द्वारा प्रस्तुत कर्म-सुख की उमंग से अवश्य प्रयत्नवान होते हैं। उत्साह में कष्ट या हानि सहने की दृढ़ता के साथ-साथ कर्म में प्रवृत्ति होने के आनंद का योग रहता है। साहस पूर्ण आनंद की उमंग का नाम उत्साह है। कर्म-सौन्दर्य के उपासक ही सच्चे उत्साही कहलाते हैं।

अथवा

अभिषेक की बात चली, मन में अभिषेक हो गया और मन में राज के साथ राम का मुकुट प्रतिष्ठित हो गया। मन में प्रतिष्ठित हुआ, इसलिये राम ने राजकीय वेश उतारा, राजकीय रथ से उतरे, राजकीय भोग का परिहार किया, पर मुकुट तो लोगों के मन में था, कौशल्या के मातृ-स्नेह में था, वह कैसे उतरता, वह मस्तक पर विराजमान रहा और राम भीगे तो भीगे, मुकुट न भीगने पाये, इसकी चिंता बनी रही। 10×2

2. हिंदी कहानी के विकास पर प्रकाश डालिए।

अथवा

हिंदी निबंध के विकासक्रम को स्पष्ट कीजिए। 12

3. कहानी के तत्वों के आधार पर 'पुरस्कार' कहानी की समीक्षा कीजिए।

अथवा

"'मलबे का मालिक' कहानी में विभाजन की त्रासदी को व्यक्त किया गया है।" इस कथन की समीक्षा कीजिए। 12

4. 'उत्साह' निबंध का सार लिखिए।

अथवा

निबंध की कसौटी के आधार पर 'मेरे राम का मुकुट भीग रहा है' की समीक्षा कीजिए। 12

5. 'अंधेर-नगरी' में निहित व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए।

अथवा

'घीसा' की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए। 12

6. किसी **एक** पर टिप्पणी लिखिए:

Download all NOTES and PAPERS at StudentSuvidha.com

(क) नयी कहानी

(ख) नाटककार जयशंकर प्रसाद । 7

downloaded from StudentSuvidha.com

3000

Download all NOTES and PAPERS at StudentSuvid

This question paper contains 3 printed pages]

2019

Roll No. | | | | | | | |2|0|1|9|

S. No. of Question Paper : **2407**

Unique Paper Code : **62051313**

Name of the Paper : **Hindi-B**

Name of the Course : **B.A. (Prog.)**

Semester : **III**

DESHBANDHU COLLEGE ★ LIBRARY ★ Kalkaji, New Delhi-19

Duration : **3 Hours** Maximum Marks : **75**

(Write your Roll No. on the top immediately on receipt of this question paper.)

downloaded from StudentSuvidha.com

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. हिंदी गद्य के उद्भव और विकास की संक्षिप्त रूपरेखा प्रस्तुत कीजिए। 12

अथवा

स्वतंत्रता पूर्व हिंदी नाटक की विकास-यात्रा का परिचय दीजिये।

2. 'गुंडा' कहानी की मूल संवेदना लिखिये। 12

अथवा

'बूढ़ी काकी' पाठ का कथ्य स्पष्ट कीजिए।

3. 'सदाचार का ताबीज़' पाठ का मूल विचार बताते हुए वर्तमान के सन्दर्भ में उसके महत्त्व का विश्लेषण कीजिए। 12

P.T.O.

Download all NOTES and PAPERS at StudentSuvidha.com

अथवा

'मेले का ऊंट' पाठ के रचनात्मक उद्देश्य का विवेचन कीजिए।

4. 'अंधेर नगरी' में वर्णित समस्याओं के आधार पर नाटक की समीक्षा कीजिये। 12

अथवा

'बिबिया' में वर्णित सामाजिक समस्या का पाठ के आधार पर विश्लेषण कीजिए।

5. किन्हीं **दो** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 10,10

(क) "आधी रात जा चुकी थी, आकाश पर तारों के थाल सजे हुए थे और उन पर बैठे हुए देवगन स्वर्गीय पदार्थ सजा रहे थे, परन्तु उसमें किसी को वह परमानंद प्राप्त ना हो सकता था, जो बूढ़ी काकी को अपने समक्ष थाल देख-कर प्राप्त हुआ। रूपा ने कंठारुद्ध स्वर में कहा—काकी उठो भोजन कर लो मुझसे आज बड़ी भूल हुई, उसका बुरा ना मानना। परमात्मा से प्रार्थना कर दो कि वह मेरा अपराध क्षमा कर दें।

(ख) उधर फाटक से तिलंगे भीतर आने लगे थे। चेतसिंह ने खिड़की से उतरते हुए देखा कि बीसों तिलंगों की संगीनों में वह अविचलित होकर तलवार चला रहा है। नन्हकू के चट्टान सदृश शरीर से गैरिक की तरह रक्त की धारा बह रही है। गुंडे का एक-एक अंग कटकर वहीं गिरने लगा। वह काशी का गुंडा था।

(ग) आज दिन तुम विलायती फिटिन और टमटन जोड़ियों पर चढ़कर निकलते हो, जिनकी कतार तुम मेले के द्वार पर मीलों तक छोड़ आये हो, तुम उन्हीं पर चढ़कर मारवाड़ से कलकत्ते नहीं पहुँचे थे। यह सब तुम्हारे साथ की जन्मी हुई है। तुम्हारे बाप पचास साल के भी ना होंगे इससे वह भी मुझे भली-भांति नहीं पहचानते। हाँ उनके भी बाप हों तो मुझे पहचानेंगे। मैंने ही उनको पीठ पर लाद-कर कलकत्ते तक पहुँचाया है।

6. किसी **एक** पर टिप्पणी लिखिये : 7

(क) हिंदी उपन्यास का विकास

(ख) भारतेंदु मंडल का खड़ी बोली हिंदी के विकास में योगदान

(ग) फोर्ट विलियम कॉलेज का महत्व।

StudentSuvidha.com
downloaded from
Download all NOTES and PAPERS at StudentSuvidha.com